अपठित गद्यांश के हल सहित उदाहरण

निम्नलिखित गद्यांशों के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. युवा शक्ति किसी भी देश का प्राण और भविष्य होती है। जिस देश की युवा शक्ति भटक जाती है, उस देश को अवनति के गर्त में गिरने से कोई नहीं बचा सकता। दुर्भाग्यवश, आज भारत की अधिकांश युवा शक्ति दिशाहीन है। अपराधियों की सूची में युवाओं की तादाद अधिक है। लूट-खसोट, डाकेजनी, चोरी, बलात्कार, हत्याकांड आदि में अधिकतर युवा वर्ग लिप्त पाया जाता है। यहाँ का अशिक्षित युवा वर्ग तो दिशाहीन है ही, शिक्षित युवा वर्ग भी दिशाहीन है। वह बी०ए०, एम०ए० कर बेरोज़गारों की लंबी कतार में जा खड़ा होता है। उसे समझ में नहीं आता कि वह क्या करे। दूसरी ओर, उच्चस्तरीय जीवन-शैली उसे आकृष्ट करती है। उसे भी मोबाइल, मोटरकार, बंगला आदि की इच्छा होती है। ऐसी कर्महीन इच्छाएँ उसे अपराधों की ओर ढकेल देती हैं। शिक्षा को रोज़गार से जोड़कर और पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा अनिवार्य कर इस दिशाहीनता को काफ़ी हद तक कम किया जा सकता है।

1. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक चुनिए।

(क) देश का भविष्य : युवा वर्ग (ख) देश का आधार : बुजुर्ग

(ग) देश की खुशी : बच्चे (घ) इनमें से कोई नहीं **उत्तर** (क)

2. किसी भी देश की युवा-शक्ति के भटकने पर क्या होता है?

(क) देश प्रगति के पथ पर आगे बढ़ने लगता है

(ख) देश में युवकों को अधिक सुविधाएँ मिल जाती हैं

(ग) देश अवनति की गर्त में गिर जाता है

(घ) देश में युवकों को आरक्षण प्रदान किया जाता है **उत्तर** (ग)

3. भारत के लिए दुर्भाग्य की बात क्या है?

(क) युवकों का जागृत होना

(ख) युवा शक्ति का दिशाहीन होना

(ग) बच्चों की पढ़ाई पर अधिक ध्यान न देना

(घ) बच्चों को खेल-कूद के लिए रोकना **उत्तर** (ख)

4. युवा वर्ग कैसी घटनाओं में सम्मिलित पाया जाता है?

(क) लूट-खसोट, हत्याकांड (ख) चोरी, डाकेजनी

(ग) बलात्कार (घ) सभी सही हैं **उत्तर** (घ)

5. युवाओं की दिशाहीनता को कैसे कम किया जा सकता है?

(क) पाठ्यक्रम से नैतिक शिक्षा हटाकर

(ख) कुशल अध्यापकों की भर्ती करके

(ग) शिक्षा को रोज़गार से जोड़कर और नैतिक शिक्षा अनिवार्य करके

(घ) शिक्षा की बजाय खेल-कूद को अधिक बढ़ावा देकर **उत्तर** (ग)

2. मनुष्य का जीवन संसार के छोटे-बड़े सभी प्राणियों और पदार्थों में श्रेष्ठ माना गया है। वह इसलिए कि मनुष्य बड़ा बुद्धिमान और विचारवान प्राणी है। अपने विचारों के बल पर वह कुछ भी कर सकता है और बहुत ऊँचा उठ सकता है। परंतु वे विचार सच्चे, मनुष्य के व्यावहारिक जीवन से संबंध रखने वाले, सादे और पवित्र होने चाहिएँ। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर ही सादे जीवन और उच्च विचारों को मानव-जीवन की सफलता की सीढ़ी तो माना ही गया, सारी मनुष्यता बल्कि सारे प्राणी जगत का हित साधने वाला भी माना गया। सादगी व्यक्ति के पहनावे से नहीं, बल्कि उसके प्रत्येक हाव-भाव और विचार से भी टपकनी चाहिए। तभी वह सब तरह की उन्नति और विकास का कारण बन जाया करती है। विश्व इतिहास गवाह है कि संसार में आरंभ से ही सादगी पसंद लोग ही दूसरों को उच्च विचार देकर उन्नति और विकास की राह प्रशस्त करते आ रहे हैं। महात्मा बुद्ध, संत कबीर, गुरु नानक, महात्मा गांधी, डॉ० राधाकृष्णन, बिनोवा भावे आदि महापुरुष इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

1. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक चुनिए।

(क) ऊँचा पहनावा, उच्च विचार (ख) सादा पहनावा, साधारण (आम) विचार

(ग) सादा जीवन, उच्च विचार (घ) ऊँचा पहनावा, बुरे विचार **उत्तर** (ग)

2. मनुष्य को इस संसार के सभी प्राणियों और पदार्थों में श्रेष्ठ क्यों माना गया है?

(क) बड़ा मूर्ख और विचारवान होने के कारण

(ख) बड़ा बुद्धिमान और विचारवान होने के कारण

(ग) बड़ा बलशाली और समझदार होने के कारण

(घ) बड़ा बलशाली और कुमति (कुबुद्धि) वाला होने के कारण **उत्तर** (ख)

3. मनुष्य के विचार कैसे होने चाहिए?

(क) सच्चे (ख) व्यावहारिक जीवन से संबंध रखने वाले

(ग) सादे और पवित्र (घ) सभी सही हैं **उत्तर**

4. किसे मानव जीवन की सफलता की सीढ़ी माना गया है?

(क) सादे जीवन और बुरे विचारों को (ख) सादे जीवन और उच्च विचारों को

(ग) ऊँचे जीवन और ऊँचे विचारों को (घ) ऊँचे जीवन और बुरे विचारों को **उत्तर**

5. प्रस्तुत शब्दों की सही भाववाचक संज्ञाएँ छाँटकर लिखिए—**ऐतिहासिक, विकसित।**

(क) इतिहास / विकास (ख) इत्तफ़ाक / विकासशील

(ग) इंसाफ़ / विकास (घ) इतिहास / विकासशील **उत्तर**